DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO - 9415376545
B.A PART - I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. Date 13/04/2020

राजनीति सिद्धान्त – परिचय एवं परिभाषाएँ
(Political Theory)

राजनीति (Politics) - शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के पोलिस (Polis) शब्द से हुई है। जिसका अर्थ होता है - नगर राज्य।

प्राचीन यूनान में छोटे-छोटे नगर राज्यों को 'राज्य' के नाम से जाना जाता था। प्राचीन यूनानी विचारक अरस्तू को

राजनीतिक सिद्धान्त
राजनीति विज्ञान } जनक - अरस्तू
राजनीति शास्त्र

क्योंकि अरस्तू ने 158 देशों के संविधानों का व्यावहारिक अध्ययन करके इस विषय को मौलिक स्वरूप प्रदान किया। इसीलिए अरस्तू को राजनीति शास्त्र का जनक माना जाता है। अरस्तू की सर्वश्रेष्ठ कृति का नाम ही Politics था।

राजनीति दर्शन का जनक } प्लेटो

अरस्तू के गुरु का नाम प्लेटो था। अरस्तू के शिष्य का नाम सिकन्दर महान था।

राजनीति (Politics) - राज्य के परित: संचालित होने वाली समस्त राजनीतिक गतिविधियों को राजनीति कहते हैं।

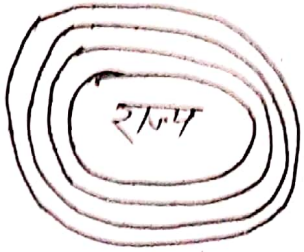

सिद्धान्त (Theory) - सिद्धान्त शब्द की उत्पत्ति आंग्ल भाषा के 'Theoria' शब्द से हुई है। जिसका तात्पर्य है - एक निश्चित विजन या उद्देश्य को प्राप्त करना। ताकि निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। और समय की व्यर्थता तथा धन के अपव्यय से बचा जा सके।

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO - 9415376575
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Date 13/04/2020

Ref. No.................

शास्त्र - शिष्यते अनेन इति शास्त्र: - अर्थात जिससे शिक्षा ग्रहण की जा सके, वही शास्त्र है।

विज्ञान - किसी भी वस्तु, स्थिति या घटना का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है तो उसे विज्ञान कहते हैं।

राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है जिसमें राज्य के परित: संचालित होने वाली समस्त राजनीतिक घटनाओं या गतिविधियों का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है तो उसे राजनीति विज्ञान कहते हैं।
साधारण भाषा में राजनीतिक सिद्धान्त, राजनीतिशास्त्र और राजनीति तीनों शब्दों का एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है। या इन्हें पर्यायवाची समझा जाता है। तथा अधिकतर व्यक्ति राजनीति या राजनीति सिद्धान्त में भेद नहीं कर पाते। लेकिन इन शब्दों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं और इनमें स्पष्ट अन्तर भी उपरोक्त में दर्शाया गया है।

आधुनिक राजनीतिक विचारक जैलिनेक ने कहा है कि "राजनीति विज्ञान के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा विज्ञान नहीं है जिसको समुचित शब्दावली की इतनी अधिक आवश्यकता हो।"

राजनीति और राजनीति विज्ञान का अन्तर एक ही विषय के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पहलू हैं।

सीले, विलोबी, ब्राइस आदि आधुनिक विद्वान इसका प्रयोग शासन के व्यवहारिक सिद्धान्तों एवं कार्यों के लिए करते हैं, जिनका राज्य विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है।

गिलक्राइस्ट इसका प्रयोग आधुनिक सरकार की वर्तमान समस्याओं के अर्थ में करता है जो गैर राजनीतिक भी हो सकती है। इसका प्रयोग निर्वाचन सार्वजनिक पदाधिकारियों के चुनाव तथा राजनीतिक नीतियों के लिए भी किया जाता है। राजनीति शासन संचालन तथा व्यवहारिक राजनीतिक संस्थाओं में रुचि रखती है जिसका राज्य के सैद्धान्तिक विवेचन से सम्बन्ध नहीं है।

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date. 13/04/2020

राजनीति शब्द के इन्हीं अनेक अर्थों के कारण तथा वैज्ञानिक उपादेयता नष्ट हो जाने के कारण आधुनिक विद्वान 'राजनीतिशास्त्र' शब्द का प्रयोग करते हैं। गार्नर के शब्दों में– "राजनीति का अर्थ उन कार्यकलापों के विवेचन से है जिनके अनुसार सार्वजनिक पदाधिकारी छाँटे जाते हैं तथा राज्य की नीतियाँ चलाई जाती हैं अथवा व्यापक अर्थ में उन सब कार्यकलापों के योग से है जिनका सम्बन्ध सार्वजनिक विषयों के वास्तविक प्रशासन से होता है तथा राजनीति शास्त्र का प्रयोग उस ज्ञान का विवेचन करने से है जिनका सम्बन्ध राज्य से होता है।

विलोबी ने राजनीतिशास्त्र तथा राजनीति में भेद को अधिक स्पष्ट करते हुए कहा है कि राजनीतिशास्त्र का उद्देश्य राजनीतिक संस्थाओं का शुद्ध विवेचन तथा वर्गीकरण करना तथा उन व्यक्तियों का सही-सही निर्धारण करना है जो उनका सृजन तथा निर्धारण करती हैं। जबकि राजनीति का उद्देश्य उन सिद्धान्तों का निर्धारण करना है जिनको उन संस्थाओं के कुशल कार्यान्वन हेतु मानना आवश्यक है।

पाल जेनेट के अनुसार राजनीतिशास्त्र का क्षेत्र राज्य है। वे इसे सामाजिक विज्ञान का वह भाग मानते हैं जो राज्य के आधारभूत तत्वों तथा शासन के सिद्धान्तों की व्याख्या करता है। जो विचारधाराएँ निम्नवत हैं–

1. राजनीतिशास्त्र केवल राज्य का अध्ययन करता है।
2. राजनीतिशास्त्र केवल सरकार का अध्ययन करता है।
3. राजनीतिशास्त्र राज्य और सरकार दोनों का अध्ययन करता है।

Scanned with CamScanner